

आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

मनोज कुमार लेनिन¹, प्रो० कोमल यादव²

¹शोधार्थी, शिक्षा विभाग एन.आर.ई.सी. कॉलेज, खुर्जा, बुलन्दशहर

²शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग एन.आर.ई.सी. कॉलेज, खुर्जा, बुलन्दशहर

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना है। वैश्वीकरण एवं तीव्र प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में यह स्पष्ट हो गया है कि केवल बौद्धिक क्षमता ही सफलता का निर्धारक नहीं है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी व्यक्ति के निर्णय, व्यवहार तथा करियर चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अध्ययन में यह मान्यता रखी गई कि सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के कारण आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के अनुभव, अवसर तथा भावनात्मक विकास में अंतर होता है, जो उनकी जीविका वरीयताओं को प्रभावित कर सकता है। इसी संदर्भ में मुरादाबाद जनपद के 800 स्नातक स्तर के विद्यार्थियों (400 आरक्षित एवं 400 अनारक्षित) को नमूने के रूप में लेकर प्रश्नावली विधि द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया। संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु सुषमा तालेशारा की प्रश्नावली तथा जीविका वरीयता के मापन हेतु डॉ. अमित अबराहम एवं डॉ. रश्मि पन्त की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं जीविका वरीयता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में यह संबंध अपेक्षाकृत अधिक सशक्त पाया गया, जो उनके बेहतर संसाधनों, पारिवारिक समर्थन एवं अनुकूल सामाजिक परिवेश के कारण संभव है। वहीं, आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में भी सकारात्मक संबंध पाया गया, किन्तु सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों के कारण इसमें थोड़ी कम देखी गई। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, प्रेरणा एवं निर्णय क्षमता प्रदान करती है, जिसके माध्यम से वे अपने करियर विकल्पों का अधिक संतुलित एवं यथार्थ मूल्यांकन कर पाते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि का विकास विद्यार्थियों के समुचित करियर चयन के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार यह शोध न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान देता है, बल्कि सामाजिक समानता एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देने में भी सहायक सिद्ध होता है।

मुख्यशब्द — आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी, अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, जीविका वरीयता

प्रस्तावना

आज के वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा और तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के युग में केवल बौद्धिक क्षमता ही व्यक्ति की सफलता का निर्धारक नहीं है बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक

बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपने तथा दूसरों के भावों को समझता है, उनका उचित नियमन करता है और सामाजिक परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार प्रस्तुत करता है। यह क्षमता न केवल व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है, बल्कि व्यावसायिक निर्णयों, विशेषकर जीविका चयन में भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। भारतीय समाज में आरक्षित वर्ग (जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग) और अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के बीच सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर स्पष्ट अंतर पाया जाता है। ये अंतर उनके व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास, अवसरों की उपलब्धता तथा निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को ऐतिहासिक रूप से सामाजिक व आर्थिक वंचनाओं का सामना करना पड़ा है, जिसके कारण उनके जीवन अनुभव, भावनात्मक प्रतिक्रियाएं एवं सामाजिक समायोजन के तरीके अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों से भिन्न हो सकते हैं। वहीं, अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक संसाधन, अवसर और सामाजिक समर्थन प्राप्त होता है, जो उनकी संवेगात्मक बुद्धि के विकास तथा करियर विकल्पों के चयन में सहायक सिद्ध हो सकता है। संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयाम जैसे आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल व्यक्ति के निर्णय लेने की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित करते हैं। जब विद्यार्थी अपने भावनात्मक अनुभवों को समझते और नियंत्रित करते हैं, तब वे अपने रुचि, योग्यता तथा परिस्थितियों के अनुरूप अधिक उपयुक्त जीविका का चयन कर पाते हैं। इसके विपरीत, यदि संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न होता है, तो विद्यार्थी बाहरी दबावों, सामाजिक अपेक्षाओं या अस्थायी भावनाओं के प्रभाव में आकर करियर का चयन कर सकते हैं, जो उनके दीर्घकालिक संतोष और सफलता को प्रभावित कर सकता है। जीविका वरीयता का तात्पर्य उन विकल्पों से है जिन्हें विद्यार्थी अपने भविष्य के व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहते हैं। यह वरीयता कई कारकों से प्रभावित होती है, जैसे व्यक्तिगत रुचि, अभिरुचि, योग्यता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक स्थिति, तथा रोजगार के अवसर। परंतु इन सभी कारकों के साथ-साथ संवेगात्मक बुद्धि भी एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक है, जो यह निर्धारित करता है कि विद्यार्थी इन विभिन्न कारकों को किस प्रकार समझते हैं, उनका मूल्यांकन करते हैं और अंततः निर्णय लेते हैं। उदाहरण के लिए, उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का यथार्थ आकलन कर सकता है, असफलताओं से सीख सकता है तथा अपने लक्ष्य के प्रति निरंतर प्रयासरत रह सकता है। इसके विपरीत, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी तनाव, भय या सामाजिक दबाव के कारण उचित निर्णय लेने में असमर्थ हो सकता है। आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के अध्ययन दोनों वर्गों के बीच जीवन परिस्थितियों में व्यापक अंतर होता है। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थी अक्सर आर्थिक सीमाओं, शैक्षिक संसाधनों की कमी तथा सामाजिक भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं, जो उनके आत्मविश्वास एवं संवेगात्मक संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं। इसके परिणामस्वरूप उनकी जीविका वरीयताएं भी सीमित या परिस्थितिजन्य हो सकती हैं। वे प्रायः ऐसे व्यवसायों को प्राथमिकता देते हैं जो शीघ्र रोजगार प्रदान करें या जिनमें आर्थिक सुरक्षा अधिक हो, भले ही वे उनकी व्यक्तिगत रुचि या क्षमता के अनुरूप न हों। इसके विपरीत, अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक विकल्पों की स्वतंत्रता प्राप्त होती है, जिससे वे अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुसार करियर का चयन कर सकते हैं। यह भी देखा गया है कि संवेगात्मक बुद्धि का स्तर व्यक्ति के सामाजिक परिवेश एवं अनुभवों से प्रभावित होता है। जिन विद्यार्थियों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है, उनमें संवेगात्मक बुद्धि का विकास अधिक प्रभावी रूप से होता है। वहीं, जिन विद्यार्थियों को तनावपूर्ण या प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, उनमें संवेगात्मक असंतुलन की संभावना अधिक होती है। अतः यह अध्ययन इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि यह स्पष्ट कर सके कि विभिन्न सामाजिक वर्गों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर किस प्रकार भिन्न होता है तथा यह भिन्नता

उनके करियर चयन को किस प्रकार प्रभावित करती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थियों के केवल बौद्धिक विकास पर ही ध्यान न दिया जाए, बल्कि उनके भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को भी समान महत्व दिया जाए। यदि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास किया जाए, तो वे न केवल बेहतर करियर निर्णय ले सकते हैं, बल्कि जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना भी अधिक प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। इस संदर्भ में यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है क्योंकि इसके माध्यम से वे यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके करियर मार्गदर्शन की योजना बनाई जा सकती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उनके जीविका वरीयता को किस प्रकार प्रभावित करती है तथा इन दोनों वर्गों के बीच इस संबंध में क्या अंतर पाया जाता है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा, बल्कि सामाजिक समानता एवं समावेशी विकास की दिशा में भी उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करेगा। इसके माध्यम से यह भी स्पष्ट किया जा सकेगा कि यदि विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का समुचित विकास किया जाए, तो वे अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप उचित जीविका का चयन कर सकते हैं, जिससे उनका व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास सुनिश्चित हो सके।

आवश्यकता एवं महत्व

आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण विषय है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल बौद्धिक क्षमता ही सफलता का आधार नहीं रह गई है बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी व्यक्ति के निर्णयों, व्यवहारों तथा जीवन-चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में यह क्षमता उनके करियर चयन, आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, सामाजिक अनुकूलन एवं भविष्य की सफलता को प्रभावित करती है। ऐसे में जब हम आरक्षित वर्ग (जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग) तथा अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना करते हैं, तो यह अध्ययन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि दोनों वर्गों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट अंतर होता है, जो उनकी संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयताओं को प्रभावित कर सकता है। भारतीय समाज में आरक्षण व्यवस्था सामाजिक न्याय एवं समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से लागू की गई है, किन्तु केवल अवसर प्रदान करना पर्याप्त नहीं है यह भी आवश्यक है कि विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक क्षमताओं को समझा जाए। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को अक्सर सामाजिक भेदभाव, आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक दबाव तथा शैक्षिक संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी संवेगात्मक बुद्धि का विकास प्रभावित हो सकता है। इसके विपरीत, अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को अपेक्षाकृत अधिक संसाधन, समर्थन एवं अवसर प्राप्त होते हैं, जो उनके आत्मविश्वास एवं निर्णय क्षमता को मजबूत बनाते हैं। अतः यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि किस प्रकार विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों की भावनात्मक समझ एवं नियंत्रण उनकी जीविका वरीयताओं को प्रभावित करते हैं। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपने तथा दूसरों के भावों को समझता, नियंत्रित करता तथा उचित निर्णय लेता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अपने करियर के प्रति अधिक जागरूक, संतुलित एवं लक्ष्य-केन्द्रित होते हैं। वे अपनी रुचियों, क्षमताओं तथा परिस्थितियों के अनुरूप उचित जीविका का चयन कर पाते हैं। इसके

विपरीत, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अक्सर भ्रम, तनाव एवं सामाजिक दबाव के कारण गलत या अनिश्चित करियर निर्णय लेते हैं। इसलिए इस अध्ययन के माध्यम से यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि क्या आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर है और यह अंतर उनकी जीविका वरीयताओं को किस प्रकार प्रभावित करता है। वर्तमान समय में करियर विकल्पों की विविधता अत्यधिक बढ़ गई है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, प्रबंधन, कला, उद्यमिता आदि अनेक क्षेत्रों में विद्यार्थियों के सामने विकल्प उपलब्ध हैं, जिनमें से उचित चयन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऐसे में संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को आत्म-विश्लेषण, लक्ष्य निर्धारण एवं निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है। यदि यह पाया जाता है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत कम है, तो उनके लिए विशेष परामर्श, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं, जिससे वे अपनी जीविका वरीयताओं का सही चयन कर सकें। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं परामर्शदाताओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा प्रणाली में ऐसे सुधार किए जा सकते हैं जो विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास पर अधिक ध्यान दें। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में कैरियर काउंसलिंग, जीवन कौशल शिक्षा तथा भावनात्मक सशक्तिकरण कार्यक्रमों को शामिल किया जा सकता है, जिससे सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सकें। विशेष रूप से आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए यह अध्ययन उनकी आवश्यकताओं एवं चुनौतियों को समझने में सहायता करेगा, जिससे उनके समग्र विकास के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाई जा सकें। यह विभिन्न वर्गों के बीच विद्यमान असमानताओं को उजागर करता है और उन्हें कम करने के उपाय सुझाता है। यदि यह पाया जाता है कि संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में अंतर के कारण करियर वरीयताओं में भिन्नता उत्पन्न होती है, तो समाज में समानता एवं समावेशन को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास किए जा सकते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शैक्षिक बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भी योगदान प्रदान करता है। अंततः, आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास, करियर चयन, सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीय प्रगति से सीधे जुड़ा हुआ है। यह अध्ययन न केवल वर्तमान शैक्षिक प्रणाली की कमियों को उजागर करता है, बल्कि उन्हें दूर करने के लिए ठोस सुझाव भी प्रदान करता है। इसलिए इस विषय का अध्ययन आज के समय में अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है, जो भविष्य में एक अधिक न्यायसंगत, समावेशी एवं सशक्त समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

जिशा, जी.आर. (2021) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक तनाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव पर अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के स्तर के बीच संबंधों की जाँच करना है। परिणाम छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के बीच एक नकारात्मक सार्थक सहसंबंध दर्शाते हैं। साथ ही, यह भी पाया गया कि लड़कों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता लड़कियों की तुलना में काफी अधिक है और उच्चतर माध्यमिक छात्रों का शैक्षणिक तनाव लिंग से प्रभावित नहीं होता है। वर्तमान अध्ययन ने साबित किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चर है जो एक छात्र के भविष्य और शैक्षणिक प्रगति को निर्धारित करता है।

कुमारी, अंजलि एवं त्रिपाठी, रेखा (2022) ने अध्ययन का उद्देश्य स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की सीमा की जाँच करना था। निष्कर्ष इस प्रकार हैं : (1) अधिकांश स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (2) अधिकांश हिंदू और मुस्लिम स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (3) अधिकांश छात्र और छात्राओं

में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (4) कक्षा 10 और 12 के अधिकांश स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी।

मैथ्यू अबिया ग्रेस (2023) ने मनोविज्ञान और गैर-मनोविज्ञान के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव पर अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन का परिणाम भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध का संकेत देता है। टी-परीक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि मनोविज्ञान और गैर-मनोविज्ञान के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके अलावा, मनोविज्ञान और गैर-मनोविज्ञान के छात्रों के बीच शैक्षणिक तनाव में भी महत्वपूर्ण अंतर है।

पाल, पूजा (2024) ने मुर्शिदाबाद के एक चयनित कॉलेज में कॉलेज के छात्रों के बीच आत्म-सम्मान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन किया। अध्ययन की जनसंख्या सभी कॉलेज के छात्र थे। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करके 150 छात्रों का चयन किया गया था। प्रत्येक वर्ष के अनुसार स्तर बनाए गए थे, जिस पर छात्रों ने चयनित कॉलेज, मुर्शिदाबाद से बैचलर ऑफ आर्ट (पास कोर्स) डिग्री प्रोग्राम का अध्ययन किया था। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि कॉलेज के छात्रों के आत्मसम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध भी दिखाया कॉलेज के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच अत्यधिक सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

जोशी, लक्ष्मी एवं रावत, रेणु (2025) ने उच्च प्राथमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि उनके लिंग के संबंध में अध्ययन किया। इस शोध के लिए कुल 40 उच्च प्राथमिक छात्रों को चुना गया था। एक यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता ने उत्तराखंड के ऋषिकेश के श्यामपुर में शिवालिक पब्लिक स्कूल से 20 लड़कियों और 20 लड़कों का चयन किया। निष्कर्ष उच्च प्राथमिक छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं दर्शाते हैं।

फारुखी, अजीज हामीद (2025) ने बारहवीं कक्षा के बाद विद्यार्थियों द्वारा अभियंत्रण (इंजीनियरिंग) व्यवसाय के चयन को प्रभावित करने वाले कारक एक प्रस्तावित अध्ययन किया। निष्कर्ष विद्यार्थियों को अभियंत्रण करियर के संबंध में सूचित निर्णय लेने में सहायता करेगा, जिससे उनके रुचि-क्षेत्र उद्योग की आवश्यकताओं और आधुनिक युग की तकनीकी प्रगतियों के अनुरूप हो सकें।

सिंह, मुख्तियार एवं निधि (2025) ने अध्ययन आदतों एवं दृष्टिकोण के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिरुचि पर अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों की करियर प्राथमिकता और उनकी अध्ययन आदतों तथा दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं पाया गया।

समस्या कथन

आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं जीविका वरीयता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
2. अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं जीविका वरीयता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद जनपद के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु मुरादाबाद जनपद के स्नातक स्तर के महाविद्यालयों में अध्ययन करने वाले 800 विद्यार्थियों विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

- संवेगात्मक बुद्धि मापने हेतु — सुषमा तालेशारा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
- जीविका वरीयता मापने हेतु — डॉ० अमित अबराहम एवं डॉ० रश्मि पन्त द्वारा प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

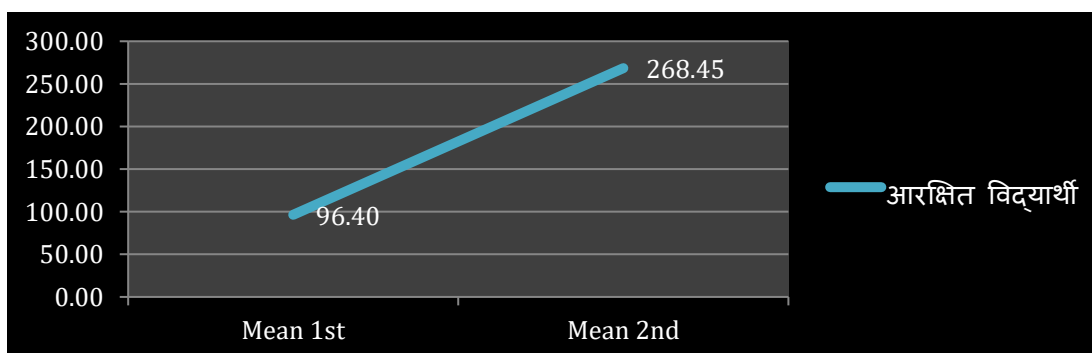
तालिका संख्या — 1

आरक्षित विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध स्तर
संवेगात्मक बुद्धि	400	96.40	0.48	धनात्मक सहसम्बन्ध
जीविका वरीयता	400	268.45		

प्रदत्तों का विश्लेषण :- उपरोक्त तालिका संख्या — 1 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं जीविका वरीयता मापनी पर 400 आरक्षित विद्यार्थी के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 96.40 एवं 268.45 हैं तथा संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य प्राप्त का स्तर मान 0.48 है, यह प्राप्त मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :- प्रतिपादित परिकल्पना — 01 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त स्तर का मान इंगित करता है कि आरक्षित विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं, अर्थात् आरक्षित विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य में सम्बन्ध व्याप्त है।

दण्ड आरेख — 1



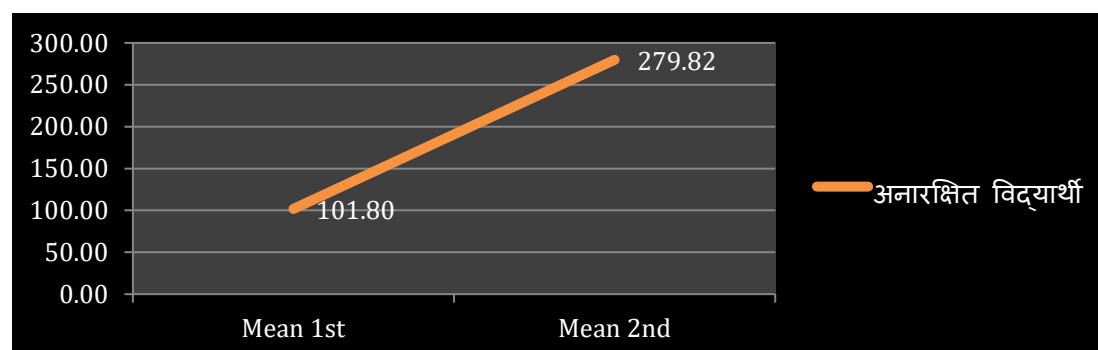
तालिका संख्या –2

अनारक्षित विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध स्तर
संवेगात्मक बुद्धि	400	101.80	0.55	धनात्मक सहसम्बन्ध
जीविका वरीयता	400	279.82		

प्रदत्तों का विश्लेषण :- उपरोक्त तालिका संख्या – 2 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं जीविका वरीयता मापनी पर 400 अनारक्षित विद्यार्थी के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 101.80 एवं 279.82 हैं तथा संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य प्राप्त का स्तर मान 0.55 है, यह प्राप्त मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :- प्रतिपादित परिकल्पना – 02 को स्वीकार किया जाता है, प्राप्त स्तर का मान इंगित करता है कि अनारक्षित विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं, अर्थात् अनारक्षित विद्यार्थी की संवेगात्मक बुद्धि तथा जीविका वरीयता के मध्य में सम्बन्ध व्याप्त है।

दण्ड आरेख – 2



निष्कर्ष

1. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं जीविका वरीयता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं जीविका वरीयता पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- जिशा, जी.आर. (2021). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक तनाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव, शोध पत्र, DOI: 10.25215/0904.065
- मैथ्यू, अबिया ग्रेस (2023). मनोविज्ञान और गैर-मनोविज्ञान के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव पर अध्ययन, शोध पत्र, DOI: 10.25215/1103.361
- पाल, पूजा (2024) ने मुर्शिदाबाद के एक चयनित कॉलेज में कॉलेज के छात्रों के बीच आत्म-सम्मान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन, शोध पत्र, DOI: <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i9.2024.5744>
- जोशी, लक्ष्मी एवं रावत, रेणु (2025). उच्च प्राथमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि उनके लिंग के संबंध में अध्ययन, क्वरू 10.25215/1301.110

- फारुखी, अजीज हामीद (2025). बारहवीं कक्षा के बाद विद्यार्थियों द्वारा अभियंत्रण (इंजीनियरिंग) व्यवसाय के चयन को प्रभावित करने वाले कारक एक प्रस्तावित अध्ययन, शोध पत्र, INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND SCIENTIFIC INNOVATION (IJRSI)
- सिंह, मुख्तियार एवं निधि (2025). अध्ययन आदतों एवं दृष्टिकोण के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवसायिक अभिरुचि पर अध्ययन, शोध पत्र, International Journal of Innovative Science and Research Technology

Cite the Article:

लेनिन, मनोज कुमार ,यादव, प्रो० कोमल. (2026). आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी जीविका वरीयता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 265-272, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026.,

DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.30>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.